Skill Development Programme

For Answer Writing

World History (Model Answer)

DATE : 28-June-2018 **TIME : 06:30 pm**

मुख्य परीक्षा

1. यूरोप में सामन्तवाद के उद्भव के लिए उत्तरदायीं परिस्थितियों की व्याख्या कीजिए एवं इसके यूरोपीय अर्थव्यवस्था पर पड़ने वाले प्रभावों को दर्शाइये। (150 शब्द, 10 अंक)

Describe the circumstances responsible for the emergence of Feudalism in Europe and outline its effects on european economy. (150 World, 10 Marks)

MODEL ANSWER

मुख्य बिन्दु

- भूमिका में सामंतवाद का संक्षिप्त परिचय दीजिए।
- अगले पैरा में उत्तरदायी परिस्थितियाँ- जर्मन आक्रमणकारी, क्षेत्रीय शक्तियों का उद्भव, पिरामिडनुमा संरचना का विकास।
- फिर अगले पैरा में अर्थव्यवस्था पर प्रभाव- नगरीकरण एवं दूरवर्ती व्यापार को धक्का, कृषि दासता एवं बंद अर्थव्यवस्था का जन्म, उपभोक्तावादी एवं ग्रामीण अर्थव्यवस्था का प्रतिनिधित्व।
- अंत में संक्षिप्त निष्कर्ष दें।

उत्तर- सामंतवाद विकेन्द्रीकृत व्यवस्था का प्रतिनिधित्व करता है जिसमें केन्द्रीय स्तर पर एक कमजोर व्यवस्था विद्यमान होती है। मध्यकालीन यूरोप में यही व्यवस्था उपस्थित थी जो कि एक दीर्घ समय तक विद्यमान रही।

<u>उदय के लिए उत्तरदायी परिस्थितियाँ</u>

- अर्द्धबर्बर जर्मन जातियों के आक्रमण के कारण केन्द्रीयकृत पश्चिमी रोमन साम्राज्य का विघटन हो गया। ये जर्मन आक्रमणकारी अलग-अलग जनजातीय समूहों में विभाजित थे।
- इन जनजातीय समूहों ने अलग-अलग क्षेत्रों में अपनी सत्ता स्थापित कर ली एवं एक संगठित साम्राज्य अनुपस्थित हो गया। इन जनजातियों के सरदार किसानों से उनकी सुरक्षा के बदले कर वसूलने लगे तथा कालांतर में इन सरदारों में आपसी संघर्ष एवं पारस्परिक वैवाहिक संबंधों के माध्यम से एक पिरामिडनुमा संरचना का जन्म हुआ।

  राजा- लार्ड- बैरन- नाइट

<u>सामंतवाद का यूरोपीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव</u>-

- एक केंद्रीयकृत साम्राज्य के विघटन के कारण नगरीकरण एवं दूरवर्ती व्यापार को धक्का लगा।
- सामंतवाद एक बंद एवं उपभोक्तावादी अर्थव्यवस्था का प्रतिनिधित्व करता है। यह क्षेत्रीय तत्वों एवं कृषि दासों पर आधारित होती है। इससे यूरोपीय अर्थव्यवस्था एक ग्रामीण अर्थव्यवस्था में परिवर्तित हो गई।

इस प्रकार सामंतवाद ने एक लंबे समय तक यूरोपीय प्रगति की संभावनाओं को अवरूद्ध रखा।

* * *

Skill Development Programme

For Answer Writing

World History (Model Answer)

DATE : 28-June-2018 **TIME : 06:30 pm**

मुख्य परीक्षा

2. **''व्यावसायिक क्रांति ने यूरोपीय सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक परिदृश्य को पूर्णत: परिवर्तित कर दिया।'' क्या आप इस कथन से सहमत हैं? व्याख्या करें। (250 शब्द, 15 अंक)**
"Commercial revolution completely changed the social, economic and religious picture of Europe". Do you agree with this statement. Discuss. (250 Words, 15 Marks)

MODEL ANSWER

मुख्य बिन्दु

- **भूमिका में** व्यावसायिक क्रांति का संक्षिप्त परिचय दीजिए।
- **अगले पैरा में** सामाजिक परिवर्तन- मध्य वर्ग का उदय, कुलीनों एवं सामंतों का पतन।
- **फिर अगले पैरा में** आर्थिक परिवर्तन- पूँजीवाद का उदय, मुद्रा अर्थव्यवस्था।
- फिर अगले पैरा में धार्मिक परिवर्तन- धर्म सुधार आंदोलन को प्रोत्साहन।
- **अंत में संक्षिप्त निष्कर्ष दें।**

उत्तर- कृषि में तकनीकी के प्रयोग एवं धर्म युद्ध जैसे कारणों ने व्यावसायिक क्रांति को उत्प्रेरित किया। व्यावसायिक क्रांति ने यूरोप के सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक परिदृश्य में महत्वपूर्ण परिवर्तन किए तथा इसके व्यापक प्रभाव महसूस किए गए। वस्तुत: व्यावसायिक क्रांति तीव्र आर्थिक परिवर्तनों से संबंधित थी जिसने समाज एवं धर्म को भी प्रभावित किया।

सामाजिक परिवर्तन

व्यावसायिक क्रांति के कारण आर्थिक संबंधों में परिवर्तन हुआ जिसके कारण एक नवीन मध्य वर्ग का उद्भव एवं कुलीन वर्ग तथा सामंतों की शक्ति कमजोर हो गयी। इस नवीन वर्ग ने वैचारिक परिवर्तनों को भी प्रोत्साहन दिया जिसके कारण पुनर्जागरण एवं धर्म सुधार आंदोलनों की पृष्ठभूमि तैयार हुई।

आर्थिक परिवर्तन

व्यावसायिक क्रांति ने यूरोपीय आर्थिक परिदृश्य में महत्वपूर्ण परिवर्तन लाए। इसके कारण पूँजीवाद का उद्भव हुआ जो कि पूर्व में स्थापित सामंतवादी विचारधारा से पृथक था। पूँजीवाद का बल लाभ पर होता है वह किसी वस्तु का आकलन लाभ के आधार पर करता है। व्यावसायिक क्रांति ने आगामी वाणिज्यवादी नीति एवं मुक्त व्यापार सिद्धांत का आधार तैयार किया था। मुद्रा के प्रचलन ने राष्ट्रीय राज्य के उद्भव को संभव बनाया तथा सामंतवाद का पतन सुनिश्चित कर दिया। मुद्रा अर्थव्यवस्था तथा बैंकिंग के विकास ने बड़ी ज्वाइंट स्टॉक कंपनी के विकास में सहायता दी।

धार्मिक परिवर्तन

- यूरोप में नवीन चेतना का उद्भव हुआ। साहसिक मनोभाव, उत्सुकता एवं खोजी दृष्टि, मानववाद, व्यक्तिवाद, धर्म निरपेक्षता जैसी मनोभावनाओं ने पारंपरिक रूढ़िवादी धार्मिक चेतना पर प्रहार किया।
- रूढ़िवादी चर्च व्यवस्था के विरूद्ध असंतोष तथा धर्म सुधार आंदोलन का उद्भव व्यावसायिक क्रांति के परिणाम थे। मध्य वर्ग ने इन विचारों को बढ़ावा देकर नवीन यूरोप के निर्माण का मार्ग प्रशस्त किया।
- इस प्रकार निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि व्यावसायिक क्रांति ने यूरोपीय सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक परिदृश्य में आमूलचूल परिवर्तन लाए।

* * *

Skill Development Programme

For Answer Writing

World History (Model Answer)

DATE : 28-June-2018 **TIME : 06:30 pm**

मुख्य परीक्षा

3. ''धर्म सुधार आंदोलन मार्टिन लूथर के बिना भी अवश्यंभावी था''। उपर्युक्त कथन के औचित्य का परीक्षण करें। (250 शब्द, 15 अंक)

"Religious Reform Movement was inevitable even without Martin Luther." Examine the relevance of the above statement. (250 Words, 15 Marks)

MODEL ANSWER

मुख्य बिन्दु

- **भूमिका में** धर्म सुधार आंदोलन का परिचय दीजिए।
- **अगले पैरा में** धार्मिक, आर्थिक एवं राजनीतिक कारकों की चर्चा कीजिए।
- निष्कर्ष में उपर्युक्त मत के पक्ष में अपना मत दीजिए।

उत्तर- मध्ययुगीन चर्च व्यवस्था में उपस्थित अनेक बुराइयों एवं रूढ़ियों की प्रतिक्रियास्वरूप धर्म सुधार आंदोलन हुआ। यह प्रतिक्रिया दो रूपों में हुई- प्रथम प्रतिक्रिया का उद्देश्य कैथोलिक चर्च व्यवस्था में व्याप्त बुराइयों को दूर चर्च व्यवस्था को मजबूत करना था। किंतु दूसरे प्रकार की प्रतिक्रिया में मध्य युगीन चर्च व्यवस्था को ही नकार दिया। इसे हम प्रोटेस्टेंट आंदोलन के नाम से जानते हैं।

जर्मन पादरी मार्टिन लूथर ने 1517 ई. में जर्मनी में ब्रिटेन वर्ग के एक चर्च के समक्ष 95 थेसिस टांगकर पोप के समक्ष कुछ मांगे रखी जिनका समर्थन जर्मन कुलीनों ने भी किया। यद्यपि इस कृत्य की सजा मृत्युदंड थी किंतु तात्कालिक राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थितियों ने मार्टिन लूथर का साथ दिया। अतः धर्म सुधार आंदोलन को इन्हीं परिस्थितियों का परिणाम मानना चाहिए।

- प्रोटेस्टेंट आंदोलन धार्मिक बुराइयों के विरूद्ध प्रतिक्रिया थी। चर्च व्यवस्था में भ्रष्टाचार का बोलबाला था। पादरी वर्ग जीवनभर पवित्र रहने की शपथ लेते थे किंतु गुप्त रूप से अनेक विवाह करते थे तथा उनकी कई पत्नियाँ एवं अवैध बच्चे होते थे। चर्च के द्वारा मुक्तिपत्र की बिक्री धार्मिक बुराइयों का चरमोत्कर्ष थी। यद्यपि इन बुराइयों के विरूद्ध सुधार की प्रक्रिया भी चल रही थी लेकिन तत्कालीन राजनीतिक एवं आर्थिक परिस्थितियों ने इसे तीव्र एवं उग्र बना दिया।
- व्यावसायिक क्रांति के फलस्वरूप अर्थव्यवस्था का तीव्र प्रसार हो रहा था। इस आर्थिक व्यवस्था की मांग थी मुनाफाखोरी एवं महाजनी को बढ़ावा देना। लेकिन रोमन कैथोलिक चर्च द्वारा इन्हें अनैतिक करार दिया जा रहा था।
- यह समय राष्ट्रीय भावना के उद्भव का भी था। चूंकि सर्वव्यापी चर्च व्यवस्था द्वारा टाइथ एवं पीटर्स सेंस जैसे करों की वसूली की जाती थी एवं इनका एक भाग रोम भेजा जाता था। अतः क्षेत्रीय शासकों में इस धन निकासी के विरूद्ध प्रतिक्रिया हुई। इस समय कुछ महत्वपूर्ण राजवंश स्वयं को स्थापित करने का प्रयास कर रहे थे जिसमें सर्वव्यापी चर्च व्यवस्था बाधा उत्पन्न कर रही थी।
- धर्म सुधार आंदोलन का एक महत्वपूर्ण कारण सामंतवादी व्यवस्था एवं मेनर प्रणाली का पतन भी था। इसमें पतन से जर्मन कुलीनों की दशा खराब हो गई अतः उनका ध्यान चर्च की भूमि पर था।
- सर्वव्यापी चर्च व्यवस्था जिसके अंतर्गत क्षेत्रीय चर्चों पर संबंधित शासकों का नियंत्रण न होकर रोमन स्थित चर्च का नियंत्रण होता था जो कि क्षेत्रीय शासकों में असंतोष का कारण था। चर्च का लोगों के जीवन पर भी प्रभाव था। अतः महत्वाकांक्षी शासकों ने धर्म सुधार आंदोलन को बढ़ावा दिया।

उपर्युक्त विश्लेषण दर्शाता है कि यूरोपीय धर्म सुधार आंदोलन तत्कालीन आर्थिक, सामाजिक एवं राजनीतिक परिस्थितियों का परिणाम था। यह विभिन्न वर्गों में पल रहे असंतोष की अभिव्यक्ति था इसलिए लूथर को विभिन्न वर्गों का समर्थन प्राप्त हुआ। इसलिए ऐसा कहा भी जाता है कि यदि मार्टिन लूथर पालने में मर गया होता तो भी धर्म सुधार आंदोलन होता।

Skill Development Programme

For Answer Writing

World History (Model Answer)

DATE : 28-June-2018 **TIME : 06:30 pm**

मुख्य परीक्षा

4. **पुनर्जागरण का अर्थ स्पष्ट करते हुए इसकी प्रमुख विशेषताओं की चर्चा करें।**

(150 शब्द, 10 अंक)

While describing renaissance discuss its main features..

150 Words, 10 Marks)

MODEL ANSWER

मुख्य बिन्दु

- **भूमिका में** पुनर्जागरण का अर्थ स्पष्ट कीजिए।
- **अगले पैरा में** पुनर्जागरण की विशेषताएँ- मानववाद, व्यक्तिवाद, धर्म निरपेक्षता, सहज सौन्दर्य की भावना, साहसिक मनोभाव, उत्सुकता एवं खोजी दृष्टि।
- अंत में संक्षिप्त निष्कर्ष दें।

उत्तर- पुनर्जागरण का शाब्दिक अर्थ है- निद्रा से जागना। यूरोपीय संदर्भ में यूरोप में उत्तर मध्यकाल के अंत में एक नवीन चेतना का उद्भव हुआ जिसे पुनर्जागरण कहा जाता है। 14वीं से 16वीं सदी के मध्य यूरोपीय विद्वानों का आकर्षण क्लासिकल साहित्य की ओर हुआ जिसे पुनर्जागरण के रूप में जाना गया।

पुनर्जागरण महज यूरोपीय संस्कृति की अभिव्यक्ति नहीं था अपितु यह अरबी एवं चीनी तत्वों का यूरोपीय विचारों के साथ संश्लेषण भी था। इसकी विशेषताओं को निम्नलिखित बिन्दुओं के माध्यम से दर्शाया जा सकता था-

- पुनर्जागरण एक मनोदशा एवं दृष्टिकोण था। इसने उत्सुकता एवं खोजी दृष्टि को बल प्रदान किया। इस चेतना ने वैज्ञानिक अन्वेषण को प्रोत्साहन दिया। न्यूटन का गुरूत्वाकर्षण का सिद्धांत इसी की अभिव्यक्ति था।
- पुनर्जागरण ने एक नवीन दृष्टिकोण साहसिक मनोवृत्ति को प्रोत्साहन दिया। इसके कारण भौगोलिक खोजों को बल मिला। कोलम्बस, वास्को-डि-गामा, बार्थोलोम्यू डियाज जैसे नाविकों ने क्रमशः अमेरिका, भारत तथा उत्तमाशा अंतरीप को खोज निकाला।
- पुनर्जागरण का बल मानववाद पर भी था। मानववाद ने आध्यात्मिक की जगह सांसारिक बातों पर बल दिया। इस विचार ने ईश्वर की जगह मानव को केन्द्र में रखकर सोचने को प्रोत्साहन किया।
- पुनर्जागरण ने व्यक्तिवाद को प्रचारित किया तथा एक व्यक्ति की समस्याओं को भी समझा। इस नवीन दृष्टिकोण ने धर्म निरपेक्षता की भावना को केन्द्र में रखा। यहाँ धर्म निरपेक्षता से तात्पर्य था कि ऐसे पादरियों की आलोचना करना जिनकी कथनी एवं करनी में अंतर है।
- पुनर्जागरण ने सहज सौंदर्य की उपासना का प्रचार किया। इसने खुली आँखों से प्रकृति के पर्यवेक्षण, परीक्षण एवं प्रयोग के माध्यम से ज्ञान प्राप्त करने को प्रोत्साहित किया। मोनालिसा का अद्भुत चित्र इस काल की अनुपम कृति है।

इस प्रकार निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि पुनर्जागरण एक नवीन चेतना का वाहक था जिसने यूरोप के समस्त परिदृश्य को बदलने का कार्य किया।

* * *